द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

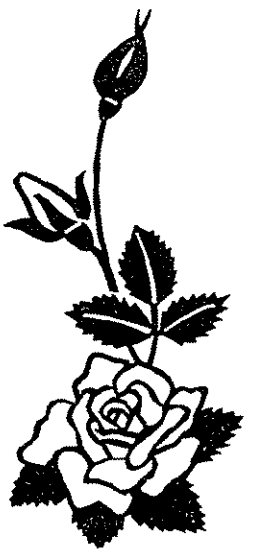

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका :-

संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसन्धानकर्ता के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यह उसके अनुसंधान की मौलिकता का आधार प्रदान करता है। क्षेत्र में हुए कार्य, उसकी विधि तथा निष्कर्ष के आधार पर अनुसन्धानकर्ता, समस्या चयन, उसकी रूपरेखा तथा शोधविधि का निर्माण करता है। इस अध्ययन में भारत की मूल जातियां जो प्राचीन समय से इस देश में निवास करती आयी हैं तथा जिनको भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति कहा गया और उनकी उन्नति के लिए कई प्रावधान और सुविधायें दी गई हैं।

2.2 विदेश में किये गये अध्ययन :-

* **बन्सटिन (1962)** ने आदिवासियों की भाषा संबंधी समस्या का अध्ययन किया और पाया कि छोटी कक्षाओं में बच्चों पर उनकी घरेलू भाषा का आर्थिक असर पड़ता है, इसके लिए शिक्षकों को क्षेत्रीय भाषा का सहारा लेना चाहिये।

* **फैन्टमी एम.डी. और बेन्सटन (1968)** ने पाया कि आदिवासियों का पिछड़ा होना उनमें शिक्षा का प्रसार न हो पाना है। आवश्यकता उनमें स्वतः को जागृत करने की है। जिससे उन्हें परिधि से केन्द्र की ओर लाया जा सके।

* **संग. टी (1971)** ने सामाजिक आर्थिक स्तर और व्यवसायिक आंकांक्षा के संबंध का अध्ययन किया। व्यवसायिक आकांक्षा के मापन के लिए हेलाण्ड की व्यवसाय की आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया था। अध्ययन से निष्कर्ष यह निकला कि सामाजिक आर्थिक स्तर और व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक सह सम्बन्ध होता है।

* **बिगनाड़ (1972)** ने सामाजिक आर्थिक स्तर और व्यवसाय में संबंध का अध्ययन किया अध्ययन से प्रमुख निष्कर्ष निकले कि जितना सामाजिक आर्थिक स्तर ऊंचा होगा उतना ही अपेक्षित व्यवसाय का भी स्तर ऊंचा होगा।

2.3 देश में किये गये अध्ययन :-

* **गोकुल नायन (1971)** "उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की प्रेरणा से संबंधित उपलब्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया।"

उद्देश्य :-

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की प्रेरणा से संबंधित उपलब्धि और शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

न्यादर्श :–

न्यादर्श में असम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत 294 लड़के और 89 लड़कियों को शामिल किया।

उपकरण :–

1. महेता का प्रसंगात्मक बोध परीक्षण
2. शैक्षिक उपलब्धि के लिए हाईस्कूल प्रमाण पत्र का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष :–

1. आदिवासी विद्यार्थियों ने गैर आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक Nach अंक प्राप्त किए।
2. ग्रामीण और गैर आदिवासी विद्यार्थियों की ग्रामीण आदिवासी विद्यार्थियों से अधिक Nach थी।
3. ग्रामीण आदिवासी एवं गैर आदिवासी बालकों की Nach में कोई सार्थक अन्तर नहीं आया जबकि शहरी आदिवासी एवं गैर आदिवासी बालकों की Nach में अंतर पाया गया।

*** रामलखन निरंजन (1974)** ने इफेक्ट ऑफ सोशियो इकानोमिक बैक ग्राउण्ड ऑन एजूकेशनल अचीवमेन्ट ऑफ आठवीं क्लास स्टूडेन्ट ऑफ इन्टरमीडिएट कालेज ऑफ आर आय ई शीर्षक के अन्तर्गत अपना लघुशोध सम्पन्न किया। अध्ययन के निष्कर्ष निम्नलिखित थे :–

1. बालको की शैक्षिक उपलब्धि उनकी सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होती है।
2. बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का माता–पिता की शिक्षा से घनिष्ठ संबंध होता है। जिन बालकों के माता–पिता उच्चशिक्षित होते हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है।
3. अभिभावकों के वेतन का संबंध भी बालकों के शैक्षिक उपलब्धि से होता है, उच्च वेतन पाने वाले बालकों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च होती है।
4. बालकों की शैक्षिक उपलब्धि अभिभावकों के वेतन की अपेक्षा उनकी शिक्षा से अधिक प्रभावित होती है।

*** सच्चिदानन्द (1974)** आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निम्न परिणाम प्राप्त हुए :–

विद्यालय में पढ़ने वाले आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा से कम थी।

*** लिंगडोह (1976) लिंगडोह** ने महाविद्यालय में अध्ययनरत आदिवासी तथा गैर आदिवासी बालक बालिकाओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा, व्यवसायिक आकांक्षा और परिवार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया।

1. अध्ययन में आदिवासी एवं गैर आदिवासी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा 0.01 स्तर पर अंतर पाया गया।

*** लखोबा (1986) प्रभालचंद्र (1989)** – इन्होंने आदिवासी क्षेत्र के समस्या एवं रूचियों का अध्ययन किया। लखोबा के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि आदिवासी छात्राओं की तुलना में गृहकार्य करने में अधिक समस्या होती है तथा छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का अध्ययन के साथ अच्छा सामंजस्य है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कमी का मुख्य कारण इनके शिक्षा के पिछड़ेपन, पालकों की शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण और प्रेरणा की कमी है।

*** कैलाशचन्द्र (1990–91)**

"आदिवासी एवं गैर–आदिवासी ग्रामों का शैक्षिक सर्वेक्षण एवं तुलनात्मक अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. आदिवासी एवं गैर आदिवासी ग्रामों का सर्वेक्षण करना
2. ग्रामों की साक्षरता का अध्ययन करना।
3. आदिवासी एवं गैर–आदिवासी ग्रामों की शैक्षिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. उपरोक्त अध्ययन से यह बात सामने आयी है कि शिक्षा वाले एवं भूमि वाले की अपेक्षा व्यवसाय वर्ग अधिक आय वाले अपने बच्चों को स्कूल भेजना पसन्द करते हैं।
2. अवलोकन करने से ज्ञात होता है, कि व्यवसायिक वर्ग एवं अधिक आय वाले लोग अपने बच्चों को अनुसूचित जाति, जनजाति एवं भूमिहीन वर्ग तथा अशिक्षित परिवार वालों की अपेक्षा पूर्व प्राथमिक शिक्षा देने के विचार से असहमत है।

*** महेता, भटनागर, जैन (1993) –**

"शिलांग (मेघालय) एवं आसपास के आदिवासी हाईस्कूल विद्यार्थियों के घर की पृष्ठभूमि, चुनिंदा मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक व्यवसायिक योजना चरों का अध्ययन किया।

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे :–

उद्देश्य :–

(1) मेघालय के शिक्षा विभाग एवं शिक्षा विदों को विद्यालयों में आवश्यक निर्देशन सेवा एवं उसकी प्रकृति से अवगत कराना, ताकि निर्देशन सेवाओं की योजना बनाने में सहायता मिले।

(2) हाईस्कूल विद्यार्थियों के शैक्षिक और व्यवसायिक विकास में मनोवैज्ञानिक और वातावरणीय चरों

की भूमिका का अध्ययन करना।

उपकरण :-

1. विद्यार्थी सूचना पत्र
2. शैक्षिक योजना प्रश्नावली
3. सेन्टर का कार्य मूल्य कार्ड
4. रेल्वे का स्टेन्डर्ड प्रोगेसिव मेट्रिसिस
5. रूचि प्रश्नावली
6. कक्षा आठवीं की अंक सूची

निष्कर्ष :-

1. आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की सामान्य बौद्धिक क्षमता में .01 स्तर पर अंतर पाया गया।
2. आदिवासी एवं गैर आदिवासी विद्यार्थियों की 0.5 स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया गया।
3. ग्रामीण आदिवासी विद्यार्थियों को शहरी आदिवासी विद्यार्थियों की अपेक्षा अध्ययन की अधिक सुविधा प्राप्त होती है। जबकि ग्रामीण आदिवासी विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति शहरी आदिवासी विद्यार्थियों से अपेक्षाकृत कम है।
4. ग्रामीण आदिवासियों को शहरी आदिवासी विद्यार्थियों से ज्यादा अपेक्षित व्यवहार की कार्य प्रकृति और उसके लिए आवश्यक न्यूनतम शैक्षिक योग्यता की जानकारी है।

*** अश्वनी कुमार गर्ग (2000)**

"बैतूल जिले के आदिवासी विद्यार्थियों के शैक्षिक पार्श्वचित्र का विकासात्मक अध्ययन"

उद्देश्य :-

1. स्व अवधारणा पर जाति, लिंग एवं उनके बीच अन्तक्रिया के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शैक्षिक उपलब्धि पर जाति, लिंग, आय एवं इनके बीच अन्तक्रिया के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शैक्षिक आकांक्षा पर जाति, लिंग, आय एवं इनके बीच अन्तक्रिया के सार्थक प्रभाव का अध्ययन करना।

उपकरण :-

मानकीकृत	**शोधकर्ता द्वारा निर्मित**
1. स्व अवधारणा	1. शैक्षिक उपलब्धि
2. व्यवसायिक आकांक्षा	2. उपस्थिति

3. शैक्षिक आकांक्षा 3. प्रश्नावली

4. शैक्षिक दृष्टिकोण

निष्कर्ष :–

1. स्व–अवधारणा पर जाति का प्रभाव पड़ता है।
2. स्व–अवधारणा पर लिंग का सार्थक प्रभाव पड़ता है।
3. स्व–अवधारणा पर जाति एवं लिंग के बीच की अन्तक्रिया का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

*** उमेश तुकारामजी बागड़े (2003)** "चंद्रपुर जिले के आदिवासी आश्रम शाला एवं जिला परिषद शालाओं के आदिवासी छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एक तुलनात्मक अध्ययन"

उद्देश्य :–

1. आदिवासी आश्रम शालाओं के आदिवासी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. जिला परिषद शालाओं के आदिवासी छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. आदिवासी आश्रम शालाओं के आदिवासी छात्र छात्राओं एवं जिला परिषद शालाओं के आदिवासी छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

उपकरण :–

1. प्रश्नावली
2. साक्षात्कार अनुसूची

प्रविधियाँ :–

1. F परीक्षण का उपयोग

निष्कर्ष :–

आदिवासी आश्रम शालाओं के छात्र–छात्राएं एवं जिला परिषद शालाओं के आदिवासी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

*** बिश्वनाथ बिसन्द्रे (2003) –**

"प्रारंभिक स्तर पर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति छात्र छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन"।

उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं का शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. अनु. जाति के छात्र–छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

4. अनु. जनजाति के छात्र छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
5. अनु. जाति एवं जनजाति के छात्र–छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।
6. अनु. जाति एवं जनजातियों के छात्र छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।

उपकरण :–

1. सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूची
2. डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ (1972)

प्रविधियाँ :–

1. "टी" परीक्षण का प्रयोग

निष्कर्ष :–

1. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।
2. अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्र छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति में कोई अन्तर नहीं है।
3. अनुसूचित जाति के छात्र छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति में सह सम्बन्ध होता है।
4. अनुसूचित जनजाति के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

*** अमोल म. मांडेकर (2005)**

"प्रारंभिक स्तर पर अनुसूचित जनजाति के छात्र–छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति, शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक समस्या तथा प्राथमिक शालाओं में प्राप्त सुविधा का विश्लेषणात्मक अध्ययन"।

उद्देश्य :–

1. अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के सह संबंध का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जनजाति के छात्र–छात्राओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि के सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक समस्या तथा प्राप्त सुविधा का अध्ययन करना।

उपकरण :-

1. डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ की सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूची (1972)

प्रविधियाँ –

1. "टी" परीक्षण का उपयोग

निष्कर्ष :-

1. अनु. जाति एवं जनजाति के छात्र छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. अनुसूचित जनजाति के निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सह संबंध पाया गया है।